अध्याय 35

वाणिज्यिक बैंकों द्वारा साख निर्माण
(Credit Creation by Commercial Banks)

1. क्या बैंक साख निर्माण करते हैं ?
(DO BANKS CREATE CREDIT?)

वाणिज्यिक अथवा कमर्शियल बैंकों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य साख अथवा जमाओं का निर्माण करना है। अन्य निगमों की भांति बैंकों का लक्ष्य भी लाभ अर्जित करना है। इस उद्देश्य के लिए वे मांग जमाओं (demand deposits) के रूप में नकदी स्वीकार करते हैं और अपने ग्राहकों को साख पर कर्ज देते हैं। जब कोई बैंक कर्जा देता है, तो वह राशि का नकद भुगतान नहीं करता। परन्तु बैंक उसके नाम से एक चालू खाता खोल देता है और उसे चैकों द्वारा जरूरत की राशि निकालने की अनुमति प्रदान कर देता है। इस तरीके से बैंक साख या जमा का निर्माण करता है।

मांग जमा दो प्रकार से उत्पन्न होती है : *एक*, जब ग्राहक कमर्शियल बैंकों में करेन्सी जमा करते हैं और *दूसरे*, जब बैंक कर्ज देते हैं, हुंडियां भुनाते हैं, ओवरड्राफ्ट सुविधाएं प्रदान करते हैं, और बांडों तथा प्रतिभूतियों के माध्यम से निवेश करते हैं। पहली किस्म की मांग जमा को प्राथमिक जमाएं (primary deposits) कहते हैं। उन्हें खोलने में बैंक का कार्य निष्क्रिय (passive) होता है। दूसरी प्रकार की मांग जमाएं व्यत्पन्न जमाएं (derivative deposits) कहलाती हैं। बैंक इस तरह की जमाएं का सक्रिय रूप से निर्माण करते हैं।

क्या बैंक वास्तव में साख अथवा जमा का निर्माण करते हैं ?

इस विषय में दो मत हैं : एक तो हार्टले विद्ज़् (Hartley Withers) जैसे कुछ अर्थशास्त्रियों का मत है और दूसरा वाल्टर लीफ (Walter Leaf) जैसे व्यावहारिक बैंकरों का मत है।

विद्ज़् का कहना है कि बैंक हर बार कर्जा देते समय जमा खाता खोलकर साख का निर्माण कर सकते हैं। इसका कारण यह है कि हर बार जब कर्जा मंजूर किया जाता है, तो ग्राहक चैक के माध्यम से भुगतान करते हैं। इस प्रकार के सब भुगतानों का समायोजन (adjustment) समाशोधन-गृह (clearing house) करता है। जब तक कर्जा देय रहता है, तब तक शेष राशि बैंकों की किताबों में बकाया रहती है। इस प्रकार, प्रत्येक कर्जे से जमा का निर्माण होता है। परन्तु यह एक अतिशयोक्तिपूर्ण एवं अतिवादी दृष्टिकोण है।

वाल्टर लीफ[1] तथा व्यावहारिक बैंकर इस मत से सहमत नहीं हैं। उनका मत इसके बिल्कुल विपरीत है। उनका कहना है कि बैंक शून्य में से मुद्रा का निर्माण नहीं कर सकते। वे तभी उधार दे सकेंगे जब उनके पास नकदी होगी। इसलिए बैंक मुद्रा का न तो निर्माण कर सकते हैं और न ही निर्माण करते हैं।

यह मत भी गलत है क्योंकि यह किसी एक बैंक से संबंधित तर्कों पर आधारित है, जैसा कि प्रो. सैम्युलसन ने लक्ष्य किया है, "जो काम हर छोटा बैंक नहीं कर सकता, वह काम सम्पूर्ण बैंकिंग व्यवस्था कर सकती है। वह अपने लिए निर्मित नकदी को नई आरक्षितियों से कई

1. Water Leaf, *Banking*, 1928. pp. 101-4 ▫